

आंतों के बैक्टीरिया बदलकर मोटापे का इलाज

अत्यधिक मोटापे के लिए आजकल सर्जरी का सहारा लिया जाता है। इस सर्जरी में व्यक्ति के पेट या आंतों को काट-छांटकर छोटा कर दिया जाता। परिणाम यह होता है कि व्यक्ति कम भोजन का सेवन करता है या उसके शरीर में कम भोजन का अवशोषण हो पाता है। तो मोटापा कम हो जाता है। वज़न में 65-70 प्रतिशत तक की कमी इस तकनीक से हासिल की गई है। इसके अलावा, इससे मधुमेह पर नियंत्रण में भी मदद मिलती है। मगर ज़ाहिर है कि इस तरह की शल्य क्रिया के खतरे भी कम नहीं हैं।

अब बोस्टन के एक अस्पताल में कार्यरत ली केप्लान और उनके साथियों ने इस सर्जरी का एक विकल्प ढूँढ निकाला है जिसमें सर्जरी की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। इस टीम ने कुछ चूहों के पेट की सर्जरी की। फिर इन चूहों की निचली आंत के सूक्ष्मजीव स्वस्थ चूहों को खिला दिए। देखा गया कि सर्जरीशुदा चूहों से प्राप्त सूक्ष्मजीव मिश्रण का सेवन करने वाले चूहों के वज़न में दो सप्ताह में 5 प्रतिशत की कमी आई। तुलना के लिए कुछ अन्य चूहों को सूक्ष्मजीव की खिचड़ी नहीं खिलाई गई थी और उन्हें भी उसी तरह के भोजन पर रखा गया था। इनके वज़न में कोई कमी नहीं आई।

यह काफी मज़ेदार बात है। जब आप पेट को छोटा कर देते हैं, तो स्वाभाविक है कि व्यक्ति कम भोजन खाता है और उसका वज़न कम हो जाता है। मगर सिर्फ सूक्ष्मजीवों के ट्रांसफर से भी वही प्रभाव क्यों हो रहा है? शोधकर्ताओं को भी इस सवाल का जबाब पता नहीं है मगर उनका विचार है कि शायद सर्जरी के बाद आंतों के बैक्टीरिया में कुछ ऐसे परिवर्तन होते हैं कि पचे हुए पदार्थों का अवशोषण कम होने लगता है। यह भी हो सकता है कि नई परिस्थिति में ये बैक्टीरिया पाचन क्रिया को ही बदलने का काम करते हैं।

शोधकर्ता यह समझना चाहते हैं कि ये बैक्टीरिया जो भी कर रहे हैं, क्या उसे हम किसी और तरीके से दोहरा सकते हैं। वैसे उपचार के रूप में बैक्टीरिया की अदला-बदली कोई नया विचार नहीं है। इससे पहले 2010 में एक 89-वर्षीय महिला को आंतों का घातक संक्रमण हुआ था। उसे जब विष्टा प्रत्यारोपण के ज़रिए किसी अन्य व्यक्ति के सूक्ष्मजीव दिए गए तो 24 घंटों के अंदर उसकी स्थिति नियंत्रण में आ गई थी। इसी प्रकार के विष्टा प्रत्यारोपण पार्किंसन रोग, मल्टीपल स्क्लेरोसिस, क्रोनिक फटीग सिंड्रोम और गठिया के लक्षणों को कम करने में भी सहायक रहे हैं। *(स्रोत फीचर्स)*